डॉ. धर्मा यादव

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी साहित्य)
एम.फिल., पीएच.डी., नेट (यू.जी.सी.)
बी.पी.एड. (शारीरिक शिक्षा)
डी.वाई.एड. (योग में डिप्लोमा)

अध्यापन : आठ वर्षों से कानोड़िया पी.जी. महिला महाविद्यालय जयपुर में कार्यरत

प्रकाशन :
- राजस्थान विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमानुसार बी.ए. द्वितीय वर्ष हेतु पुस्तक 'हिन्दी उपन्यास एवं एकांकी' (2015)
- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में साहित्यिक व आलोचनात्मक लेख एवं समीक्षाओं का नियमित प्रकाशन

सम्प्रति :
- सहायक आचार्य (हिन्दी)
  कानोड़िया पी.जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर
- सह-शैक्षणिक प्रभारी
  राजस्थान लेखिका साहित्य संस्थान, जयपुर

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

978-93-85448-15-7

आज़ादी के अमर सेनानी

डॉ. धर्मा यादव

Scanned with CamScanner

आज़ादी के अमर सेनानी

डॉ. धर्मा यादव

प्रकाशक

इंग्लिश बुक हाउस

2सी/78, विश्वकर्मा कॉलोनी

शास्त्री नगर, जयपुर

प्रथम संस्करण

2016

ISBN

978-93-85447-35-8

मूल्य

₹ 150/- रुपये मात्र

लेजर टाइपसैटिंग

लोकेश कम्प्यूटर, जयपुर

मुद्रक

शीतल प्रिन्टिंग, जयपुर

भूमिका

देश में स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत सन् 1857 में ही हो गई थी। पर उस समय क्रान्तिकारी संगठित नहीं थे, इसलिए उनका विद्रोह कुचल दिया गया लेकिन अंग्रेजों की कूटनीति, अन्याय और शोषण को जनता कब तक सहन करती। कुछ समय बाद ही देश में अंग्रेजों के खिलाफ वातावरण बनने लगा। एक ओर महात्मा गाँधी अहिंसक तरीके से अंग्रेजों का विरोध कर रहे थे, तो दूसरी ओर अनेक क्रान्तिकारी हथियारों के बल पर आजादी पाना चाहते थे और वे अपने इन इरादों से कभी पीछे नहीं हटे। उनके अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प का ही परिणाम था कि मुट्ठी भर क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया। अंग्रेज उनके नाम से ही काँपने लगे। यही कारण था कि छोटे-छोटे अपराधों के लिए उन्हें मौत की सजा दी जाने लगी। उनके खिलाफ मुकदमे तो चले, अदालत् की कार्यवाही के नाटक भी हुए, लेकिन फैसला वही हुआ, जो अंग्रेजों ने पहले से ही सोच रखा था, यानि मृत्युदंड।

लेकिन इन वीरों का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। आज हम जिस परिवेश में अपनी स्वतन्त्रता, अपने अधिकारों की बात करते हैं उसमें इन वीरों का अमूल्य योगदान है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है–

Principal
Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya
JAIPUR

Scanned with CamScanner